# पाथरक शहर

नन्दिनी पाठक

(2)



# पाथरक शहर

(कविता-संग्रह)

नन्दिनी पाठक

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

**पाथरक शहर**

**नन्दिनी पाठक**

मो. : 8294995021

**ISBN 978-81-939894-9-4**



**प्रथम संस्करण** : 2019

**मूल्य : एक सय टका**

**आवरण** : अपाला वत्स

**टंकण** : देवाशीष वत्स

**प्रकाशक** :
**किसुन संकल्प लोक**
किसुन कुटीर, गुदरी बाजार
सुपौल-852131
E-mail : kedarkanan3@gmail.com
मो. : 09471062706

**मुद्रक** : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
- नन्दिनी पाठक, फ्लैट नंबर 1-सी., वैष्णवी एन्क्लेव अमेठिया नगर, नामकुम, रांची
- किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131 (बिहार)
- शेखर प्रकाशन, पोपुलर फर्मा के पीछे, न्यू मार्केट, पटना-800001

---

**PATHARAK SHAHAR :** A Collection of Maithili Poems
by Nandini Pathak
Rs. 100/-

**कोशी क्षेत्रक**
**प्रखर मार्क्सवादी चिन्तक आ**
**गंभीर समाज-सुधारक**
**पिता शैलेश कुमार पाठक**
**आ सरस्वती स्वरूपा माता**
**वीणा पाठक कें सश्रद्ध समर्पित**

# प्रकाशकीय

कोनो-कोनो जीवन निरन्तर सृजन लेल समर्पित रहैत अछि। आठम दशकमे अपन लेखनसँ अपन जीवन आरम्भ करय बला एहन अनेक नाम स्मरण-पथमे घुरिया रहल अछि, जे लिखब तँ शुरू कयलनि वेगसँ मुदा किछुए दिनक पछाति ओ अपन दिशा बदलि लेलनि। क्यो मौन भ' गेलाह... क्यो परिवार रूपी जीवनमे अस्त-व्यस्त भ' गेलाह... क्यो चित्र बनायब आ पेंटिंग दिस अपनाकें मोड़ि लेलनि... अनेक-अनेक कारणे पत्र-पत्रिकासँ, प्रकाशन सँ अनासक्त भ' गेलाह...।

एहने एकटा नाम थिक नन्दिनी पाठक जे निरन्तर सृजनरत रहलीह, मुदा से सृजन हिनक डायरीमे होइत रहलनि, भनसाघरमे भोजन बनबैत कोनो कागतक टुकड़ी पर, ओछाइन तरमे राखल राशनक सूचीक पुरजी पर तँ कोनो पोथीक सादा पृष्ठ पर, अपन बनाओल कोनो चित्र-रेखाचित्रक कतबहि पर... मुदा लिखैत धरि रहलीह अबाध गतियें...।

पछिला तीन बर्खसँ हुनक कविता संग्रहक तार-भियार भ' रहल छल मुदा जीवनक अनेक योजना जकाँ संग्रह-प्रकाशनक योजना डायरीसँ कागतक पन्ना धरि उतरि नहि पबैत छल, उतरितो छल तँ प्रकाशनक साकार स्वरूपमे नहि आबि रहल छल। हँ, एहि बीच ओ मंच सभ पर निरन्तर सक्रिय रहलीह, जीवन आ लेखनकें वृहत्तर आयाम सँ जोड़ैत रहलीह आ अपन अनेकानेक कविता सभकें किछु पत्र-पत्रिकामे पठबैत रहलीह, तखन एहि संग्रहक सूरसार भेल आ अन्ततः पाठक लोकनिक हाथमे अछि पाथरक शहर।

नन्दिनी पाठकक कविताक स्वाद, मैथिली कविताक पारम्परिक स्वादसँ किछु भिन्न अछि। अहाँ वा हम एहि संसारमे बहुत किछु घटित-अघटित दृश्यकें देखैत छी, भोगैत छी। बहुत रास चीजकें देखैत छी मुदा तत्कालहि तकरा नजरिसँ अलोपित क' दैत छी, किछु एहन सन जे धौर, एहिमे की अछि नव... आ धीरे-धीरे ओहि सभ घटना-कथाकें, दृश्यकें बिसरि जाइत छी। सोचैत छी जे ई व्यक्त नहि भ' सकैत अछि, एहिमे कोनो नव बात नहि अछि। ठीक एहि विन्दुसँ

हिनक कविता-यात्रा शुरू होइत अछि, से एहन ठोकल-बजाओल जे क्षण भरि लेल अहाँ ठिठकब, चकित-विस्मित होयब आ सोचबा लेल विवश होयब जे अरे, एहू तरहें सोचल आ लिखल जा सकैत अछि? से थिक हिनक कविताक आरंभिक विन्दु, हिनक कविताक वितान। सामान्यसँ सामान्य घटना, दृश्यकें ओ उठबैत छथि आ तकरा एकटा लयमे, रागमे व्यक्त क' दैत छथि। आ कविता किलकि उठैत अछि। हिनक एहन किछु कविताक पांती देखब प्रीतिकर होयत—

**धनियाँ-पंचफोरन भेल निपत्ता**
**काजू-किसमिस के अछि सत्ता**
**मगज कीनिकें भानस रान्हल**
**दूध-दहीमे आटा सानल**
**कटुक मसाला स्वाद लेल**
**माछमे देलनि मिलाय**
**कलावती के पाकसाइंस**
**हमरा देखल नहि जाय**
**मूल मंत्र सीखि स्वाद केर**
**मास्टरनी लग इतराय**
**गुरुआनी आब शिष्यक आतंकसँ भानस छोड़ि नुकाय...**

एहि धरती आ आकाश पर सबहक अधिकार एक समान अछि। ओतय क्यो छोट आ क्यो पैघ नहि। तकरा कवयित्री कोन तरहें कहैत छथि—

**अही मेघमे गिद्धो उड़तै/अही मेघमे मिट्ठू-मिट्ठू**
**तोतो करतै बौआ/मेघ तँ सबहक छै**
**फुदकि-फुदकि जे चलतै/तकरो हक छै**

धर्मक नाम पर सभतरि लूट मचल छै आ सभतरि पाइक मोल छै। धर्म आ पाइ पर्याय जकाँ भेल छै, तकरा अपन कवितामे कोन तरहें ई कहैत छथि, से देखल जाय—

**पाइक बाजै तुरही**
**पाइत तीर्थ पुरी ई**
**प सँ पंडा प सँ पुलिस**
**प सँ पापी चारूदिस**
**प सँ पैसा तरहथ पर**
**राखू पाँच नमरी जगन्नाथ रथ पर**



अपन तेरह ताल कवितामे मैथिली मंच सभक दुर्दशा आ राजनीतिकरणकें व्यंग्य माध्यमे ई तार्किक ढंगें कहैत छथि—

**दस टा मैथिल मंच**
**मंच पर दस टा साझी**
**दस साझी आ एकटा झख**
**पहिने हम बाजी**
**हमर मंच हिलैत अछि**
**हम घरहि बिराजी**
**मैथिल राज लेल**
**चिकरू भोकरू मुल्ला-काजी**

हिनक कविताक व्यंग्य बहुत मारूख होइत अछि आ ओहि व्यंग्यमे निहित रहैत अछि सुधारवादी प्रवृति।

नन्दिनी पाठकक एहन अनेक कविता एहि संग्रहमे अछि जे अहाँक पारम्परिक स्वादकें थोड़ेक बदलि देत, एक नव प्रकारक, नव आकार-प्रकारक स्वादसँ अहाँ तृप्त होयब। ई तृप्ति आश्वस्तिदायक अछि।

मैथिलीमे एहि नव डेग, एहि नव वेग, एहि नव भाव-संवेगक स्वागत अछि। हिनक दोसरो संग्रह शीघ्रहि पाठकक हाथमे आओत। तावत एतबा कहब आवश्यक अछि जे हिनक कविताक मैथिल चित्र, मैथिल मानस, मैथिल छवि-छटा आ मैथिल जीवनक बिम्ब नव अछि, स्वागत योग्य अछि। पाठकक उदारता आ हुनक दृष्टि एहि कविता सभकें सहजतासँ प्राप्त होयत, से विश्वास अछि।

किसुन कुटीर
सुपौल

**केदार कानन**

# आभार

**हमर किताब छपि जाएत तँ**
**बूझब जे पाथर घुसकि गेल**
**बूझब पहाड़ कोनो खसि गेल**
**बूझब धरती एखनहुँ चुप अछि**
**समालोचना भेल जीवनक**
**हँसलहुँ हम 'से चीज' कहि**
**जीवन नबका मोकदमा मे फँसि गेल**

**अस्तु जे होइत देखल जायत**
**प्रकाशनक आभार मे की कहू आर?**
**मोनक ओरमे केदार मोनक छोरमे केदार**
**आर पारमे केदार मंझधारमे केदार**
**मोनक कोन कोनमे अहाँ**
**अहाँ हमर आभारमे केदार**

ई संग्रह हमर परिस्थितिक अकाल बेर मे निकलि रहल अछि। एक दिस माता मरणासन्न छथि, दोसर दिस किछु दुष्ट मनोवृत्तिक उत्पाती कर्म सँ' फड़फड़ाइत आत्मा अछि। टंकणक कार्य सेहो अथाह छल। चि. देवाशीष वत्सकेँ कोटिशः आशीष जे ओ अपन विपरीत परिस्थिति सँ असोथकित होइतहुँ ई कार्य पूर्ण केलनि।

सोचि के आयल छलहुँ जे पांडुलिपि केदार बाबूक माथ पर द' देबनि आ चैन भ' जायब मुदा ओ स्वयं एक बेर में कतेक रास किताबक प्रकाशनक योजनाक हठयोगमे अपस्याँत अनेकानेक पांडुलिपिक त'र मे आनन्दित छलाह।

अस्तु जेना-तेना कार्य पूर्ण भेल आ पाठकक दृष्टिक समक्ष एबाक योग्य भेल। छिड़ियाएल कवितासभ केँ पुस्तकाकारक स्थिति मे सोझाँ अनबाक लेल जे

प्रोत्साहन रांचीक **संपर्क**क मित्र आ स'र सम्बन्धी सब देलनि तिनका सभकेँ हृदयसँ धन्यवाद।

श्रद्धेय विवेकानन्द ठाकुर जी, आदरणीय भाइ सियाराम झा सरस आ छोट भाइ सदृश प्रिय मनीष अरविंद जीकेँ, हमर मोन मे छपासक प्रवृत्ति उत्पन्न कर' मे सहयोग देबाक लेल साधुवाद। एहने मित्र सभक अभाव आ प्रोत्साहनक कमीसँ हम अलोपित छलहुँ।

पटना प्रवाससँ राँची प्रवास करबाक क्रममे दू टा पुरान पांडुलिपि भोथिया गेल, जकर बाद हम हताश भ' गेल छलहुँ। लेखन कार्य मे पुनर्वापसीक लेल हम दैनिक जागरण, राँचीक आ झारखंड मिथिला-मंचक आभारी छी।

आब ई आखरक संयोजन जँ पाठक वृंदकेँ पसिन्न होयत तँ हम कृतार्थ होयब आ नहि पसिन्न तँ मुर्दा पर की नौ मन लकड़ी आ की घी? अटपट दू शब्दक संग हम अहाँ सभक समक्ष छी।

**नन्दिनी पाठक**
8294995021

1-सी, वैष्णवी एन्क्लेव
अमेठीया नगर
नामकुम राँची



# अनुक्रम

# बसंतक इच्छा

हमर भारत संस्कार केर
बड़का पुरना गाछ
सहलक पुरना गाछ बहुत
गाछक आब समीक्षा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

कोकनल जड़ि केर पातक
बाँचल रहय स्वाभिमान
ऋतु बदलल अछि आब कनेक
करब तकर सम्मान
कोमल टूसी मुँह तकैत छै
केहन बनब हम पात
ओकरहु आब परीक्षा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

जड़ीभूत, छवि
सौंदर्यहीन, जे
रूप भेल अछि
थकुचल दबल मनोबल
अति कुरूप भेल अछि
चाहय साँस मुक्त हवा मे

लहकल मोनक दीक्षा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

हमर अतीत अति पूजित
पूजित देश हमर
पड़ल फरक नहि जे
बदलल भेष हमर
विकासक हरियर पातक
आब चतुर्दिक शिक्षा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

जड़ि मे मिथिला
धर्म मनुजता
शक्ति स्वयं
सब युग केर हम छी
पुरातन पर
अधुनातन लेप कनेक टा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

आबाजाही रहतै
ऋतु केर जीत हार केर
कम नहि इज्जत हेतै
कहियो हरसिंगार केर
इहो सत्य अति सुंदर
खसल जे निच्चां छै
झड़’ दियो सब पात
बसंतक इच्छा छै



नव-नव पल्लव
आब गाछ केर ताज राखतै
ई नव पल्लव आब
जड़ि केर लाज राखतै...
बिनु दुनिया देखने की
नव दुनिया बनतै
चेतनता सँ हीन
कोना कें छाती तनतै!
संस्कार सँ तनल माथ केर
गाछ कहैत अछि
स्वस्थ फ’र बिनु
संस्कारक दुर्भिक्ष टा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

घर-आंगन मह मह आ
फूलक पथार हो...
मैथिल, बंगाली कि
उड़िया आचार हो
हाथ प्रेम पात्र
माथ साजल सिंगार हो
संस्कारक शितलहरी मांगय
सुखायल पातक भिक्षा छै
झड़’ दियौ सब पात
बसंतक इच्छा छै

# पराश्रित

पराश्रित जीवनक दुख अछि घोंटय पड़त
तानब धैर्य केर चद्दरि कतेक छोटे पड़त
प्रेम आ सद्भावना केर भीख मे
जे पड़त, अठन्नी, खोटे पड़त...
प्रेम आखर,भाव चाकर
मोन मे ढुका लिय'
नहि तँ लट्ठ वाक्यक
मोन पर मोटे पड़त
पराश्रित जीवनक दुख अछि घोंटय पड़त
अलंकृत भाखा केर शैली अलगहि
उपमा सुनि सुनि मोन कहय
चिता पर चल गे
समृद्धि तेहन शब्द केर, जे
व्याकरणक जय जय
अन्योक्ति केर भाव मे अनर्गल उक्ति जीति जाइछ
मूल धातु केर अर्थ बदलि देत प्रत्यय द'सब
प्रेमक अर्थ बदलि देत उच्चारणक अनुतान नव
सोचय पड़त
पराश्रित जीवनक दुख अछि, घोंटय पड़त



# प्रेम चभच्चा

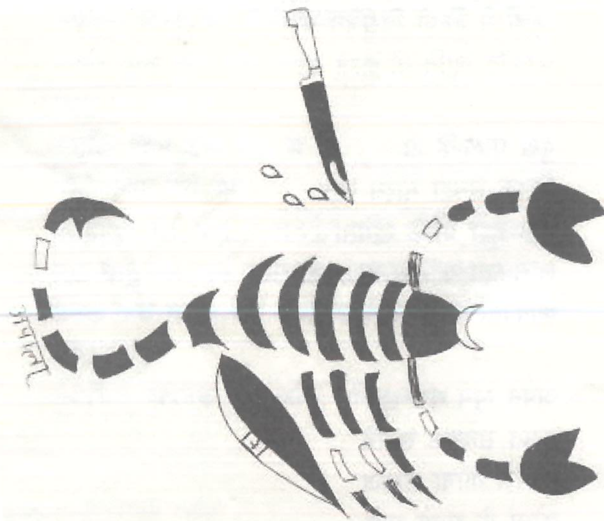
बनत प्रेम केर फेर चभच्चा
फेरो जनमत कांकोर बच्चा
प्रेम करत फेरो जनमाओत
एहि सँ बेसी काजे की?
कांकोड़ जाति कें लाजे की

मानवता पर पिहकी पारय
अप्पन प्रेमक धुआँ पजारय
सौहार्दक पानि आगिये ढारय
धुआँ मे कियो बिराजय की
कांकोड़ जाति कें लाजे की

दुख एक्कहि टा
हितक झपट्टा मारय जेता
बुट्टी बुट्टी प्रेमक खयता
ल'सकता कहियो बाजे की?
कांकोड़ जाति कें लाजे की

अपन खून बस खून
बूझत सबहक खराबे
समरस कोना समाज
कोना के भावो भावै?
आँखि देखाबय दीयर

भौजी मुँह नुकाबय
एहन मे चरिपतिया तुलसीक
कहियो केओ गाबय की
धर्मक लाज बचाबय की?
रावण सन जदि पति भेटय आ
विभीषण सनहक भ्राता
मंदोदरीक करेज फाटत तँ
दुख बुझता राम विधाता
जत' धर्म नहि, पिता ने माता
लिखय सहोदर विक्षत गाथा
सत्य कही हम कांकोड़ लाथें
हिनकर गढल समाजे की
एहि समाज कें लाजे की





# फूलो दाय

फूलोदाय-फूलू दाय
पकड़ि कें बासन झूलू दाय
डिब्बा माजू,झपना छोड़ू!
एकटा बासन बेसी देब तँ
भोंकब अहाँ तिरशूलो दाय
आधा पेंशन अहीं कें दैत छी
जुनि एना करू भरिपेट्टा खाय
सबहक चमकल दीया बाती
हम्मर घर गेल आर गन्हाय
वृद्ध देह, मनोरथ क्षय
एहि सँ नीक जे बनू नक्सली
राखि कें कोनो उसूलो दाय!

मेहनति ताकति, इमान पहिल
तखन जवानी, नहि तँ भय
कलियुग मे भगवान अहीं छी
चरण धरि करू, हमरो जय!
जँ पूर्वज सँ गलती भेल तँ
क्षमा करू सब भूलो दाय
पकड़ि के बाढ़नि झूलू दाय

# बुधना मजूर

बुधना मजूरक पेड़ाय हेतै पहिने
तखन महाशय तोड़ी हेतै
कटनी, छटनी, तखन फटकनी
तखन सरिसों घरे हेतै
एक रत्ती तेल देने थोड़े हेतै?
नहि सजमनि केर तरूआ भोरे हेतै

ओगरवाही मे डाँर तोड़ि
कमौनी मे हाड़ तोड़ि
जमा रुपैया नोटबंदी मे जारतै
बरख भरि माथ पर तरहथ मारतै
ओतेक रुपैया फेर थोड़े हेतै?
नहि सजमनि के तरूआ भोरे हेतय

फेर वएह सुन्न हवा फेर वएह परती
फेर बिनु बीयाक मुँह तकैत धरती
बिनु खाद-पानि लत्ती कोना लतरतै
लोहिया मे फेर अल्लू जरतै
पैंचक झिंगा मे झोरे हेतै
नहि सजमनि केर तरूआ भोरे हेतै

सजमनि केर लत्ती सेहो अगत्ती!
लत्ती अगत्ती अकड़तै सबटा पात हहरतै



नहि जमीन जनक, मालिक अछि घातक
की दोष पातक?
जड़ि के दोष छै
ज'न भागल पैंजाब ककरो होश छै?
बुधना कतबहु खेत मे ह'र देतै
कदाचार केर लत्ती मे-
नहि सदाचार केर फ'र हेतै
बुधना खून बोकरतै, मरतै
बुधनी कें ककरा पर भ'र हेतै
नहि सजमनि के तरूआ भोरे हेतै

के टिकतै आ के भागत
के सिरमा लग जागत
की बुधनी करत बगावत
जीवन तँ संग्राम ओकर छै
बुधना छै ऐरावत
खसत जखन ओ--
अपन भूख सँ डरे हेतै
नहि सजमनि केर तरूआ भोरे हेतै

से सत्य अटल
लत्तीक लेल काटितै मालिकक बाँस?
खिचितय बुधना अंतिम सांस
सत्य कह'मे डर की
बाँस कटितय तँ बनितय फड़की
बुधनी ककरा लेल
तरूआ आर बनेतै
समाचार सरकार बनेतै
बुधना मरलै बाँस चोरब'मे
चर्चा घरे घ'रे हेतै
नहि सजमनि केर तरूआ भोरे हेतै

# सम्बन्धक व्यवसाय

किछु नहि घटतै जनता दल के
किछु नहि घटतै आप केर
बाउ क्विकर पर बेच दहुन बाप कें

देह पर उगल भ्रष्टाचारक
चित्ती संग हेथुन...
मोल मोलाय तूं क' के देखही
पित्ती संग देथुन
किछु नहि कहथुन पीसा-पीसि
किछु नहि कहथुन काकी
सबहक गृहस्थी दैव भरोसे
लोक कहतै ककरा की?
जे आशीषक पार रे,
तकरा लेखें सराप की?
बाउ, क्विकर पर बेच दहुन बाप कें

गहमा गहमी अछि बजार मे
खूनक सम्बन्धो बिकाइत अछि
आब पुण्य की पाप की
बाउ, क्विकर पर
बेच दहुन बाप कें....



# खटा खटी

सूतू मैयाँ खटा खटी
बड़ पैघ भ' गेला बेटा-बेटी
आब पलंग केर आस जुनि करू
आब पटियो पर विश्वास जुनि करू
पसरिकें सूतब बिसरि जाउ
दोग मे घुसकैत धीरे-धीरे
धरती सँ अहाँ ससरि जाउ

सब हाथा-हाथी उठा लेता
आ, कन्हा पर चढ़ा लेता
भाव राखब शांत मुख पर
करबेता शवासन कन्हा पर
जुनि देखू करेज आब हुनकर
सिनेहक मिथ्या विश्वास जुनि करू
समीकरण सब बदलि गेल छै
छोड़ू दुलारक सटा सटी
बड़ पैघ भ' गेल बेटा-बेटी

पुतहु नहि सहती, कहती खट
बेटा भेल विद्वान् उद्भट
चाह बनेलहुँ कतेक कप से
क'लिय'गिनती मोटा मोटी
सुतू मैयाँ खटा खटी

अपन गोत्र अहाँक नहि आइ
परगोत्री बेटी आ जमाय
अहाँ सासुरक पान-मखान
सोखा लग उत्सर्गित भ'जाउ
विदा होम'लेल चटे-पटे
सूतू मैयाँ खटा-खटी
बड़ु पैघ भ'गेला बेटा-बेटी





# भटरंग

बड़का गाछ डेरायल अछि
भेल अमरबेल सन सबहक मति
संस्कारक जड़ि कत' जेती
कोन पत्रशेष खयती
लत्ती मे भेल भटरंग फूल
जीतल कहू आब कोन मूल?

एत'-ओत'-जत'-तत'
जतय नहि सोचल, पसरल तत'
जाति ने देखल,पाँति ने देखल
संतति सहत आघात ने देखल
महुआ आम सुखाओल समूल
जीतल कहू आब कोन मूल?

मंत्र मैथिलीक पहिने बिसरल
हिरदय मे हिंदी कें भोकल शूल
नाच शुरू अंगरेजिये मे भेल
ताक-धिना-धिन करू कबूल
जीतल कहू आब कोन मूल?

नाचल मजूरनी, नाचल तित्तिर
एहन देह नहि भेटतनि फेर...
युगक गर्द पड़ल छल मोन पर
भनहि झड़ल सब धूरा-धूर
जीतल कहू आब कोन मूल?

# मोन तीत

तीत तीत तीत तीत
मोन बड़ तीत मीत
सरकारी आफॅर मेगा!
हमर समस्याक भरल चभच्चा
लोक कहै 'मनरेगा'
कित कित कित कित
दुष्ट गेल फेर जीत
कोना के बढतै हूबा?
भ्रष्टाचार पर
परितहूँ पिहकी
रहिये गेल मनसूबा

कित कित कित कित
रोटी नोर सहित
गीरब कतेक हौ बाप
जेहने जनता दल छलै
तेहने भेलखिन आप
कित कित कित कित
कोन हार कोन जीत

जनते भेलै सराप
हमर दालि नहि गलतै
ई शासन अहिना चलतै



# सस्ता जतरा

खनहि कान सँ कान सटल
आ खनहि नाक सँ नाक
गरदनि हिलितय, हमहूँ सुनबितहुँ
अप्पन दुखक राग
सबसे बेसी एत' जगैत अछि
पाकिटमारक भाग

भीड़ एहन जे अप्पन साँस नहि अप्पन
नाक जेना तेसर केर
एकटा कान सिंहेसराक
दोसर बिसेसर केर
खन मे गाल फूलय सटकय
जेनरल बोगी मे
बिसरि जाइत अछि लोक चिन्हान
अप्पन मौगी मे

कतय बैसब? प्रलय मे प्राण अछि
बरक कात मे बैसल
मेहरुनिस्सा एहसान अछि
कोना देह के टीशन उतारब
वंचित भ' सोहाग सँ हारब
लोक बरोबरि गेन्हारी खेसारी
धर-धर पकड़-पकड़ जल्दी घुस

कोसी एक्सपिरेस छियै जाइ नहि हूसि
भैयारीक अवरोध, माइक परबोधन
बापक थाप ससुरक अभिशाप
डिब्बे मे बैसत पंचैती खाप
बैसल दल बल संग जनता दल
खन मैं मैं खन तूँ तूँ आप
समता ममता कम टा
सबटा अखिलेशक बाप

हमहूँ कोंचल एक्सपिरेस मे कहाँ खसैत छी
अप्पन सहयात्रीक सोच पर, झूमि हँसैत छी
चढ़ब अगिला बरख लेने मोन मे आशा
जन गण मन केर कहिया बदलत परिभाषा?

रेल मंत्री चढ़ल जहाज हाथ हिलल
देखू हांजक हांज
कोरक बच्चा पिचा क' मरलइ
धयने माय कनैत अछि पाँज
सस्ता जतरा केर माया
नहि बिसरब कोसी काया
एक पर एक सब बिनु हया
जन गण मन दुखदायक अछि ई
की गरीब की पाइ बला
के अछि भाग्य विधाता एत'
विधना भेल ल' जाइबला



# मौगी ओझाइन

मौगी पर द' सपता-बिपता
परिजन मंत्र नुकाबय सबटा
सदाचार केर नहि सम्मान
अप्पन मौगी सबहक महान
तरहथ पर ल' सबटा ज्ञान
गुणमतिया बचबैत छथि प्राण

जाहि स्त्री कें गुण होइछ बेसी
जकरा बेसी कला विशेष
ताहि मौगी कें द' पटकनियाँ
दोसर तेसर लगबय ठेस...
जे मौगी धर्मक शृंगार
तकरे होइत अछि सबतरि हार
जे होइछ दिव्य, सुमुखि, सुकेशी
तकर पाँछा दुष्ट विशेष

सप्पत देहक चित्ती केर
बापक होय कि पित्ती केर
कतेक सहत केओ आघात
कहिया धरि सद्बुद्धि आहत
चुगलखोर पर चाटी मारी
मंत्र उचारी
दुष्ट नहि जीतय, ओ नहि हारए...
ओ समाजक सौभाग्य सम्हारए

भ्रष्ट दुराचारी के मारए
मंत्र हकारए
डेगहि डेग पर डाइन भेटैत छै
एक्कहु नहि ओझाइन भेटैत छै

ककरा कत्तेक हक्कल कहतै
कत्तेक हक्कल एकसर सहतै
घरहि-घर पुरुख अछि ओझा
घर-घर मौगी डाइन
जतेक पैघ जे लुतरी लारय
से ततेक पैघ गिरथाइन
हमर मंत्र मे मौगी ओझाइन





# बुधियारी

की समाज ई
काठ के काटि ने हारय
खुहरी भेल संस्कार
झट सँ आगि पजारय

एहन विधाता वाम नहि देखल
सभहक हाथ टेंगारी
दे लोहार धधरा पर पानि
एहिमे छै बुधियारी

धार कने भोथ तँ रहतै
धरती कतेक सहतै...



# चर्चा करती कोनो भौजी

केबाड़क पल्ला झकझोड़ि देथिन ओ
नहि फुजतनि ठोकला सँ खिड़कियो
प्रयास मे बूझ' के बात कें
शांत रहता छन भरि सोचिते
किनसाइत साँझ दैत हेतनि पत्नी
नहि बुझथिन चुप्प रहत साँसक आवाज
तकथिन बाट, पिटथिन जोर सँ
गारिक आरम्भ भ' जेतनि भनभनी
मर' के बादो नहि कमी
नहि सुनि सकय बला गारि
जाहि कारणे जीवन, मृत्यु लेत स्वीकारि
समाप्त हेतनि भक्तिन केर यात्रा
तकर बाद सत्य बाज' मे कोन खतरा
स्वर्ग मे ठनकत कान साहित्यकारक
चर्चा करती कोनो भौजी
पति आ दीयर केर विष्णु लग
विष्णु निरीह सन हेरता मुँह लक्ष्मीक
लक्ष्मी कहथिन, भगवान बिसरि जाउ
मृत्युलोकक गप्प आ
कोनो नव आकृति गढ़ू कोनो नवयुगक भौजीक
जे साटि सकय पट्टी गारि पढ़ैत मुँह पर



# चलू गाम दिस

शहरमे दौड़ि रहल अछि
अनेको सड़क विकासक
ठाम कुठामक लेल
सड़क के दौड़िते
दौड़ि जाइत अछि अनंत आकांक्षा
पेट कें पकड़ने लेने अनंत भूख
मन्हुआयल सड़क आ भुखायल मनुक्ख
आसमान सन मुँह बौने
धुर, कड्डा, बिगहाक भूख
छाती मे नुकौने

अहंकार आ अभिमानक भूख
बढ़ल जा रहल अछि, बेरोक-टोक
बिनु कयने शोक
केओ चरपहिया पर आँखि गड़ौने
केओ दुपहिया पर परिवार लटकौने
केओ ससरैत
दुनू टाँग पर देह घिचैत
एक दोसर कें पीचैत
दौड़ैत, थकैत, बैसैत
अगुताइत खसैत मुँहक भ'रें
संस्कारक सीमान पर

जोड़ि दैत माइ बापक गठबंधन
छोड़ि दैत जीवनक जिलेबिया मोड़ पर
कम भ' जाइत अछि मनुजता
सड़क विकासक नाप जतबहि आशीष
ततबहि सराप
आगू बढ़ैत सड़क पर
पिछड़ि जाइत अछि आत्मा
सड़क पर छुटि जाइत छैक कतेको पिता
सड़क पर छूटि जाइत छथि माँ
नहि रहि सकैत अछि बचिक'
विकासक पीच सड़क सँ लोक
ई जतबहि आनंद दैत अछि
ततबहि दैत अछि शोक
मोनक दुख चौराहा नहि मेटत
जुनि देखू एम्हर-ओम्हर
के छथि दहिन के बाम दिस
प्रिय, छोड़ि शहरक सड़कक मोह
चलू गाम दिस





# प्रेमक कविता

प्रेमक कविता कखन लिखब?
आब' दियौ राज गरीबक
जहिं-तहिं जखन-तखन लिखब

जखन टिनही मनोबल सोझ हेतै
चमकल रहतै, पिचकल नहि
खेनिहार जखन निर्भीक खेतय
हिस्सा मे हिलसा रहतै
जखन बासमती केर चाउर हेतै

बहुत चहटगर,मुँह सुसुएतै
आँखि पानि ल' मोन मुसुकेतै
जखन चुनियाँ केर चुनरी सँ
झड़तै गुलाब
जखन आँखि तड़ेरतय नहि मेम सा'ब
तखन चुनमा केर साँस मे
सुगंधक रुआब
सड़लाहा अन्न-भात बूझत खराप

जखन झोर पर छह-छह तेल करतै
चुनमाक मोन रभसि पड़तै

झट द' चुनियाँक हाथ पकड़तै
थारी धरिते पिरही लग
चुनियाँ केर मुँह लाल हेतै
सेब सन चमकैत जखन
चुनियाँ केर दू गाल हेतै
जहिं-तहिं जखन-तखन लिखब
नहि प्रेमक कविता अखन लिखब





# पियाक प्रेम

अहाँ हमर बनारस
हम अहाँक अस्सी घाट प्रिये
अहाँ बूझू हम्मर ठाठ प्रिये
अहाँ के डुबेबा काल मे
हम भैयारी आठ प्रिये
जे मानत हम्मर बात जिये
साक्ष्य ने राखू हाथ प्रिये

बनमुरगी संग मे आनब
हम हरिया पीबि कें मानब
अहाँ कानब त' कानब
अहाँ स्त्री मे सर्वोत्तम जाति प्रिये
साक्ष्य ने राखब हाथ प्रिये

धर्मक रटन लगा क' हमरा
सिखबी नहि बुधियारी
अहाँ अधर्मक संगे रहि कें
हमर बनल रहू प्यारी
द' के धर्मक संग जुनि करब
हमरा पर आघात प्रिये
साक्ष्य ने राखब हाथ प्रिये

मानल पिता अहाँ के ज्ञानी
मुदा बचल ने आब निसानी

जे ज्ञान देलनि अहाँ कें
हम ओकरो नहि मानी
हमहुँ सरिपहुँ बहुत बदललहुँ
मुदा बदलब नहि अप्पन जाति प्रिये
साक्ष्य ने राखब हाथ प्रिये

सदाचार आ कदाचार केर
मध्य नहि फँसब दुलारी
अदौ सँ लक्ष्मी जीतल छथि
छथि सरस्वती बेचारी
हम जंगली नहि खुंखार बहुत नहि
मुदा क' सकैत छी प्रतिघात प्रिये
साक्ष्य ने राखू हाथ प्रिये

धुर, हम कतेक बुझाउ अहाँ कें
भेलहुँ हम बेचारा
हमरे टा सँ सतू अहाँ
घर बैसल खाउ चारा
नहि त' पेट भर' लेल मारत
कतेक झपट्टा बाज प्रिये
साक्ष्य नहि देतै काज प्रिये

हमर जाति के गप्प ने पूछू
हम्मर जाति अजूबा
जतेक लोक विरोध करैत अछि
ततेक बढ़ैत अछि हूबा
पीबय हम निसां बनू अहाँ
इएह हमर मनसूबा
खाली जुनि करबै जाम प्रिये
चुटकी बजतै हम्मर एम्हर



ओम्हर अहाँ हेबै बदनाम प्रिये
साक्ष्य के चूतै घाम प्रिये

छाती तानि चलब हम
एन. एच. हो वा एकपेरिया
डाँर मे ध' क' हाथ
अहूँ चलबै ओरिया-ओरिया
डियर, पीयर नीक नहि लगैत छी
रंग बदलू अहाँ सात प्रिये
साक्ष्य ने राखब हाथ प्रिये

अहीं बनल छी खाली एकसरुआ सवाली
बैसल झख अहीं मारैत छी
दिन राति बनि काली
हरियर झंडी सब देखेलकै
अहाँ बिनु चलतै नहि काज प्रिये
साक्ष्य सँ आउ बाज प्रिये

छोड़ू जाप काली तारा केर
जुनि करू दुर्गा-दुर्गा
बैसू मजा मे बना क' चखनी
हमहूँ काटी मुर्गा
हमरा सँ तँ सब के लाज
अहाँ सँ ककरा लाज प्रिये
साक्ष्य सँ आउ बाज प्रिये

सत्य काम अछि, काम सत्य अछि
असत्य चराचर सबटा
कामदेव हम
रति बनू अहाँ
बदलू हमर छविटा

सुर केर सुरा
बूझू हरिया कें
तखन बनतै बात प्रिये
साक्ष्य ने राखू हाथ प्रिये

सुरा केर सरिता बहय मोन मे
लगइछ अहीं के कबकबटा
राम,राम अहाँ किएक कहैत छी?
हमरा तँ प्रिय काम प्रिये
प्रेम पाश मे हमरा बान्हू
अहाँ हमर कामाख्याधाम प्रिये





## नव संरचना

कतहु बान्हि नहि देल जाइनि बाढनि
शूद्र लोक सब संग देतनि स्त्री के
सबटा शूद्र स्त्री
चुनती आब
अपना लेल एकटा ब्राह्मण युवक केर हाथ
आ अपन सत्कर्मसँ
ओहि ब्राह्मणक माथ पर
करती शब्दक छेनी आ अर्थक हथौड़ी सँ कलात्मक प्रहार
ताहि कला सँ निकस'बला हेता, एकटा पुरुषक आकृति
फूंकल जायत जाहि मे प्राण
तकर नहि होयत कोनो जाति
से अजाति जन्म देत, एकटा मनुखक जाति
से अजाति जन्म देत, एकटा स्त्रीकें पुनः
उत्पत्ति होयत ब्रह्मांड मे श्रेष्ठ सँ श्रेष्ठतर
सुरक्षित होयत जाहिसँ गाम, शहर
से जाति रक्षा क' सकत अपन
तकरा देखि मनोबल भगवानक नहि हेतनि कम
से हेता स्वाभिमानी
गरदनि झुकल नहि रहतनि हरदम हार लग
गोहारि नहि करता अपन सुरक्षाक लेल सरकार लग
से जाति संशोधन करत ब्रह्माण्डक
जन्म देत नबका ब्रह्मा कें
जिनका लग नीक बुद्धि हारि नहि बैसत
जिनका लग सरस्वती कुमारि नहि बैसत

# सतनी

हथिदहमे गंगा भरतै
आ सरकारो थाहि लेतै
अपन काठ सभ नाह बनेतै
गाछक जड़ि टा बहि जेतै
करमटोलमे कोशी उफनत
खेती ककरो लहि जेतै
पाथर चोर ठीकेदारक
सत्य दाबले रहि जेतै
पानिक पाइ पानिमे जेतै
बैसक्खा पोखरि कहि जेतै
भनहि बाम हो इंजीनियर
नचारी सुनि ईश दहिन रहतै
सतनी केर आदति छै सतनाय
सतिते-सतिते दहि जेतै...



# शिष्यातंक

यै भनसीया ई कोन छटा
बूटक दालिमे देलहु खट्टा
सोलह कला
अहाँ लग विकल
बनलहुँ पद्मिनी,
क' कें नकल
गुरुआनि सँ क' लेलहुँ दू-दू हाथ
'साइंसक' जाति मे ढुकौलहुँ 'आर्ट'
पाक कला भेल आधा गणित
अरकच-बथुआ दूनू सनित
धनियाँ-पंचफोरन भेल निपत्ता
काजू-किसमिस के अछि सत्ता
मगज कीनिकें भानस रान्हल
दूध-दही मे आटा सानल
कटुक मसाला स्वाद लेल
माछ मे देलनि मिलाय
कलावतीके पाकसाइंस
हमरा देखल नहि जाय
मूल मंत्र सीखि स्वाद केर
मास्टरनी लग इतराय
गुरुआनी आब शिष्यक आतंक सँ
भानस छोड़ि नुकाय...

# विसंगति

उद्दण्डताक रूप ई प्रचण्डनीक नहि
आब नहि युग ओ कि
माया चलय बस राम केर
आब नहि युग ओ कि
हाथ मे चक्र बस घनश्याम केर

नहि समय अछि
जे कि-दुर्गा दान कमंडल लिअए
नहि समय ओ कि
त्रिशूल मोहताज भ'
स्त्री लग नहि पाबथि जय
विष्णु केर जे चक्र से
लक्ष्मी चलेथिन आब सँ
बेटी पुतहु केर शक्ति देखल
तें कहैत छी रोआब सँ
नहि विसंगति पुश्त-दर-पुश्त होयत आब
नहि संगति मे सहत स्त्री राक्षसी स्वभाव!



# ललमुनियां

केओ पाँखि जदि तोड़य
ताहि सँ पहिने
केओ तोरा नोछारय
ताहि सँ पहिने
चीं-चीं कहिहह
नहि चुप रहिहह
सहिह'

मुदा स्नेह भरि
ककरो आँखिक पानि सुखा जाय
उड़िहह ताहि सँ पहिने
केओ तोड़य चाहे टाँग
घर घुरिहह ताहि सँ पहिने
अपन मोन केर आकाश मे
तोरा लेल
हम राखब एक गोट दुनिया
हे हमर ललमुनियाँ

# हम करब बियाह कने देरीसँ

कक्का, जुनि होउ अहाँ हक्का-बक्का
जौं करब हम अखन विवाह
तँ लागत टक्का
अहाँ आनब कनहा-कुबड़ा
करब पीठक पाछू झगड़ा
हमरा नहि चाही सहयोग
बहिनदाय भोगि चुकलि सब भोग
आब रहू अहाँ बस चुप्पे
मंजूर फूलल मुँह गुप्पे
नहि व्यथा उघारू अनेरे सँ
जे दाग सहलथि से हम नहि सहब
हम दूध सँ पानि अलग क' क' रहब
हम सहब नहि कोनो आघाती कें
जरय देबैक नहि ठेहुन पर बाती कें
बदलब दुनिया, नहि कानथिन माँ
मोन केलियनि जिनकर चालनि जकाँ
खसलनि चित्त, घोंटि लेलखिन पित्त
निकलब भ्रष्टाचारक चक्रव्यूह केर घेरा सँ
मुदा जायब नहि अखन एहि डेरासँ
स्त्री छी तँ फंसब कतहु ने कतहु
चक्रव्यूह केर घेरे मे
मुदा करब बियाह कनेक देरे मे



# हम हिलसा

हम हिलसा
हुलसल पहुँचैत छी
समुद्रक सीमान
लहर रे कनेक दुख तों जान
बचा आब सौभाग्य हमर तों
अछि जन्मल बच्चा मुँहटुट्टू
खा जायत एकरा मनुक्ख आ
गिद्ध सन मनुखक स्वादक अभिमान
लहर रे, कनेक दुख तूँ जान
मोहक सागर पार करैत छी
चोट-घाँट एहि देह सहैत छी
तकैत रक्षा मे, नदीक सिमान
लहर रे,कनेक दुख तू जान
तोरहि ब'लें शहर नांघैत छी
उन्टा मूड़ी चल आब लहर
सागर करतहु सम्मान
लहर रे, बाट तकैत अछि प्राण
अखनहुँ साँस मे आस एकटा
हमर पिता
हमरा आ हिलसा मे करैत फरक
करता अभिमान
लहर रे, तूँ दुख मोनक जान

# हक

अही मेघ मे गिद्धो उड़तै
अही मेघ मे कौआ
अही मेघ मे
मिट्ठू-मिट्ठू
तोतो करतै बौआ

मेघ तँ सबहक छै
फुदकि-फुदकि
जे चलतै
तकरो हक छै



# हतास

आब कोन लुत्ती सँ
कोन धधराक आशा अछि
सुखायल ढेंग सन सद्‌भावना
ठुड्ड अभिव्यक्ति अछि
मुरझायल टूसी मे निष्प्राण सन
सिनेहक परिभाषा अछि

जड़ि मे धधकैत भावना पसारैत अछि घृणा
कोना कही अंकुर प्रेम मे अछि
जमल जा रहल अछि पानि आँखिक
शहर लहकैत आ धुआँ उमेद केर
मरैत प्रेमक हताशा अछि

# सहन

स्त्री देह नदी सन होइत अछि
अपनहि खूनक संग बह' पड़ैत छै
दुख दोसर के देत, नदी कें
मोनक बाढ़ि संग दह' पड़ैत छै

पोखरिक कात केर
भाकनि-पात-केर
काँट-कूस-केर
घात-अपघात सब सह' पड़ैत छै

घरक ब्रह्मांड सम्पूर्ण ओकरहि
घुमि घुमि कें रह' पड़ैत छै
छोड़ि अप्पन कें ककरा दन कें
अप्पन-अप्पन कह' पड़ैत छै

कोनो पुत्र मे बाप उगैत छै
कोनो पुत्र मे पित्ती
कोनो पुत्र मे माम उगैत छै
जदि सबटा चित्र विचित्रे

तखन टेढ़ घोंच सब
चित्र कलाकें
फाइन आर्ट त' कह' पड़ैत छै



बहिनदाइ, सह' पड़ैत छै

स्त्री देह नदी सन होइत अछि
अपनहि खूनक संग दह' पड़ैत छै
दुख दोसर के देत नदी कें
मोनक बाढ़ि संग बह' पड़ैत छै
बहिनदाइ, सह' पड़ैत छै



# सतपतिया

हम सती हमर पति सतपतिया
एकसरे ओगरलहुँ अपन खाट
ओ बदलि लैत छथि चट 'पटिया'
कह' के गप्प अछि, कहि दैत छी
कहू कहब कोना ई सब बतिया
हम सती हमर पति सतपतिया

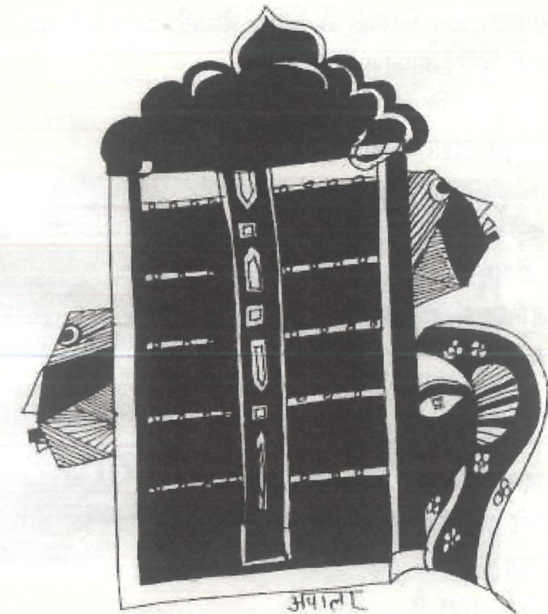
एक हाथ पर हिना, दोसर मीना
तेसर टीना, चारिम देखतै
छूटत पसेना, पाँचम छठम मे
सकदम
सातम सद्यः ठाढ़ छी हम
के पतियाय
हम सती हमर पति सतपतिया...

सौतिन केर स्वागत मे
कुचरल कौवा सन भेल मुँह
हमर न'ह-केस लेल व्याकुल
हुनकर नौआ सन भेल मुँह
अबिते सौतिन जपैत अछि माला
बड़की घर मे किएक
एक्कहि सुर मे बजली सभ गोटे-
पिया! पिया! पिया!
अस्तु मंझली,सँझली बिक्ख आनलनि



कहैत छथि पीबह आठम झट द'
तखनहि छिकलक-
कहलियनि सत्तन जीबह!
फेर नहि कोनो सौतिन आबय
एतेक छिकलखिन किएक
हम सती हमर पति सतपतिया

सातम धरि सब ठीक-ठाक छल...
आठम मे खतम ओठंगर विधि बल
जागल बेटीक मनोबल
तोड़लनि बन्हन चिचिया-चिचिया
पूछथि चिकरि-भोकरि कें सदिखन
सतलहुँ एतेक कियैक?
हम सती, हमर पति सतपतिया



# रिफ्यूजी

ओहो मनुख छै...ओकरो मोन छै
मुदा निर्धन छै
ओकरहु लग छै बेश तमन्ना
कोन सरकारक करतै जय-जय?

नहि पैनकार्ड आ नहि आधार छै
भाषण भरमार छै
हाहाकार छै
ओकरा लेल मेटायल छै अक्षर 'वै'
धरा चुप्प, आकाश चुप्प छै
भुक-भुक बिजली आँखि चोन्हराबय
ओकर दिशा अन्हार भुक्क छै

कतेक कानत?
ओकरा के जे अपन मानत?
दुनिया मे दू जीव प्रमुख छै
एक अंडा एक स्तनधारी
अपन पाँखियै जे उड़ैत अछि,
ओकरे सुविधा भेटय भारी
जनम मरन दुनू खून सँ लथफथ
डेगे डेग प्रतिघात, होइत हत्
हाय अभागल, दिन राति जागल
भागि रहल छै
कत्त' जयतै?



कत्त' खयतै?
वास कत' छै?
आब एकर आवास कत' छै?

केओ पेट सँ ककरो जनमैत
कत्तहु देखू मरल बच्चा
प्रसव दरद सँ चिकरल जच्चा
केओ प्रेम कें छोड़ि डरल छै
ककरो प्रेमी काल्हि मरल छै
ओहिना ओकर लहास पड़ल छै
आस नहि पूरलै
क्रियाकर्म कें, के अबधानय
ओकरा केओ अपन नहि मानय
जकर केओ अपन नहि,
नहि केओ आन छै
हा! दैव वएह रोहिंग्या मुसलमान छै



# बाउ बच

खन आउ कहथुन,खन जाउ कहथुन
खन देथुन भगा, मारि हबक्का
खन मुसकी द' के पारि ठहक्का
खन करथुन प्रेम, खन चक्का जाम
बाउ गे, तदपि फेरो जो गाम
दुष्ट फेकैत अछि थूक प्रेम पर पच पच
सौहार्दक रचना रच, बाउ बच! बच! बच! बच!

दैव देथु सबकें नीक मति
दनि मुक्ति सरस्वती
भ' जायत पार समय कठिन अति
जे हेबाक छल से भेल क्षति
तकरा लेल कते काँव कच-कच
सौहार्दक रचना रच, बाउ बच! बच! बच!

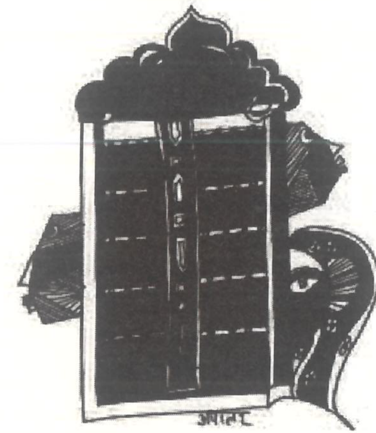
उमेदक धुआँ सहब प्रेम पजरत
दम साधि फूकब तँ स्नेह बढ़त
लाख घृणा पजार' मे अछि क्यो रत
सौहार्दक रचना रच, बाउ बच!बच! बच

ओ करय तँ करय अराड़ी
लिये भीन भिनाउजक आड़ी
चलबय सौहार्दक छाती पर कच! कच! कच!
संबंधक रचना रच! बाउ बच!बच!बच!



# पाहुन

पाहुन एलखिन पाहुन एलखिन
पाकिट मे सब नोट ढुकेलखिन
फेर होटल केर चर्चा केलखिन
कतेक खरच भेलै पाय, बतेलखिन
हमरे लग रहथिन, कहि गेलखिन
गंगा-जमुना बनि बहि गेलखिन
घरबैया बनब पसिन्न नहि हुनका
मोहिया   मोहिया कहि गेलखिन
हम्मर आँखिक पानिक उप्पर
मारि ठहक्का दहि गेलखिन
पाहुन एलखिन पाहुन एलखिन



# पाथरक शहर

ई पाथरक शहर छै
गरकि जयबाक डर छै
छाती पर उठौने भार
माथ पर आ गात पर पाथर
दौड़ि नहि सकैछ लोक
पाथरक पहरा डेग डेग पर छै
ई पाथरक शहर छै

मोम सन मोनक मर्दन एत’
पसिन्न नहि तानल गरदनि एत’
जकरा बल पर तनत गरदनि
से गरम सन पाथर एत’
कांकड़-कांकड़ पर
आगिक लहरि छै
ई पाथरक शहर छै

पाथर सेनुर पाथर पायल
पाथर गर्भ सँ शिशु बहरायल
पाथर पिता, पित्ती पथरायल
पाथर पाहुन जे घर आयल
पाथर प्रेम सँ प्रेमी घायल
खंडित हृदय स्नेह दर्शायल
पाथर भेल देह
पाथर पर जे पाथर मारब



लुत्ती उड़ि जेतै
पुनि बनि आगि डराओत गाम
चार प्रेम केर जरतै
लुत्ती फेक’ बला लोक केर
अगणित एत’ ठहर छै
ई पाथरक शहर छै

# धरतीक दुख

महानगर केर सड़क कात मे
चन्ना हक्का बक्का
देखलक अमावस्या दिन पोल पर
नकली चानक ठहक्का
डेगहि डेग पर बड़का टावर
डेग डेग दस महला
धरती के छाती तोड़बा काल
सब 'नहला पर दहला'
सोचि लिय' सुरूजदेव हाल अपन
सृष्टि फुलेती गाल अपन





# उक्कापाती

अहू बरख फेर तोड़ी बेकल छै
करु तेल दस बुन्न निकलतै
साग गेन्हारियेक बनतै
बनतै नहि तरकारी
उक्कापाती बेच' टुनमा
जेतै गढ बरूवारी

टुनमा बौह केर रोटी पाकत
टुक टुक ताकत टुनमा बाप
ककरा टुनमाक बौह खुएतै
आँचर छै अभिशाप
भरतै बापक पेट तँ टुनमा तकतै
दू टा पेट भर' लेल टुनमा झखतै
कोना कें पढ़तै टुनमा बच्चा
साहित्य छन्द कवित्त
पेट पकरने दूनू हाथें
नै सरस्वती नै लक्ष्मी तृप्त
कि लक्ष्मी घर दरिद्रा बाहर
दूओ ओकरा लेल अघाती
मिझायल दीप मे जरल मनोरथ
भेल नहि उक्कापाती

# गिद्धक अंडा

निर्भर अछि जीवनक स्वच्छता
गिद्धक शिष्टाचार पर
दू टा अंडा गिद्ध देलक अछि
हमर गाछक डारि पर

लोक सुनत तँ हँसत
गिद्धक सुरक्षाक आचार पर
अनुगृहीत मोन मुदा गिद्धक उपकार पर
टूटा अंडा गिद्ध देलक अछि
हम्मर गाछक डारि पर

छी अभ्यासी हम स्वच्छताक
गिद्ध सड़ल घिनायल खाइत अछि
डरल छथि संवेदनशील सब
गिद्ध पड़ायल जाइत अछि
व्यथित भ' जाइत छथि धरती
निवासी केर व्यभिचार पर
टूटा अंडा गिद्ध देलक अछि
हमर गाछक डारि पर

गिद्ध केलक अछि सिद्ध
लहासकें गिद्धे टा खाइत अछि
ओ मनुक्ख कोन मनुक्ख जिनका



ने गिद्ध ने मनुक्ख सोहाइत अछि
चौंकि उठैत छी हमहूँ स्वप्न मे
गिद्ध पड़ायल जाइत अछि
सोचि रहल छी थाकल-हारल
धरती केर वात्सल्यक आभार पर
टूटा अंडा गिद्ध देने अछि
हमर गाछक डारि पर

धरती करती सहन
जनमल गिद्ध आ मनुक्खक धौंस
लोक खखोरय लोकक आत्मा
गिद्ध खखोरय मासु
सोचि रहल छी हम बिनु गिद्धक
आकाशक शृंगार पर
टूटा अंडा गिद्ध देने अछि
हमर गाछक डारि पर

# कनैत धरती

आइ फेर कानतीह धरती राति भरि
काल्हि बनत फेर सँ जमीन पर शहर
गाड़ी केर पहिया सँ उड़त धूर फेर
छोट छोट लत्ती सुखाक'खसत फेर
ताहि शहर केर फूल सबटा,ताहि शहरक पात
सहत पजेबाक आघात
बचत कंकड़क जाति भरि
आइ धरती कानतीह फेर राति भरि

बिसरिकें कष्ट सबटा बाट केर
सजल रहत पांतिमे
गमला आ गुलदस्ता केर औकाति भरि
आइ धरती कानतीह फेर राति भरि
आइ पूछत जड़िसँ फेर पात कोनो
कतेक सहत आघात इहो देह, मोनो
आघात नहि अछि गाछ भरि
आइ धरती कानतीह फेर राति भरि



# गिरगिट

बीस टा आंगुर तोरो गिरगिट
ढेबरी सन-सन आँखि
कतेक फतिंगा असगर खयलें
तखनहु नहि भेलौ पाँखि
टक्क लागौने सोचैत रहलें
दौड़ैत बड़का घर
कखनहुँ मुदा नहि सोचलें क्षण भरि
मरबें कतहु देबाले पर
देहो तोहर मोट भ' गेलहु
रंग बदलि कें जीवन जीलें,
पूर ने भेलहु तमन्ना
बदलि कें बनितें रामदेव सन
कखनहुँ बनितें अन्ना

सदाचार केर रंग बदलितें
सभ रंग, रंग-बिरंग
हमरहु घर सोहाओन लगितै
गिरगिट तोरे संग
की तोरो जीवन धत्त
कखनहु चित्त, कखनहु पट्ट

# घर घुरि जो

फेर वैह सागर वैह गगरी
फेर वैह नागर वैह नगरी
कोम्हर जाइत छह छोड़ि डगरे
बाढ़ि विरोधक, पानि सगरे

विदा भेलह हिरदय हिलकोरि
बीच भँवर मे हमरा छोड़ि
तोहर मनोरथ बालु पर पानि
बौआ जो! मुदा ले ई जानि
तोरा बिनु घर हमर शमशान
तोरा बिनु सब अप्पन आन
बिनु तोहर की हमर अभिमान
हरत साँझ दिवाकरक प्राण

फेर हेतय सुन्न हवा
फेर सांय-सांय
फेर हम चुप्पे
सब टाँय टाँय
के बाज' लेल सप्पत देत
गाल पर टघरल नोर रहि जायत
के देखत के पोछत आब
माटि पर गड़कल, मोन भेल राब

कष्ट सहत मिठास धर्मक



मिलत बालु सँ, कोन कर्मक
हम साँझ ओगरब, नहि चान हमर
दिन कोन तोहर? जो बाहर
मुदा राति सँ पहिनहि घुरि जो
छूट' दही जहाज पाइ केर
बहुरि जो बौआ, घर घुरि जो



# जीरो माइल

जीरो माइल पर जीवन अटकल
बेटी गेली सासुर
पुतहुक कोनो छवि
ने दूर दूर!
मोन घोर भेल आतुर

एकसरूवा पर पाहुनक आगमन
नहि नैहरक नहि सासुरक
संग महिषासुरक
वध ओ क' कें रहता
पतिदेव हँसि कें कहता
मुदा एकहु वार बचेता नहि
बिनु खुशामदे खेता नहि
पाहुन सँ कम एकहु आइटम
बिनु धौ कहने मुँह लेता नहि



# गेल हमर भोर

फेर देखू धूर्त मेघ
घेरि ललक सूर्य कें
दहो दिश प्रकाश द'
चारु भर सँ समेटि शक्ति अपन
अवश भ'
पसारि रंग गेरुआ
बाट अपन हेरिक'
थोपि देलक मनोवृति
जकर जे छल से
कतहु कतहु उज्जर आ
शेष रंग क्लेश केर
सूर्य देखलनि मेघ आ
छलकि गेल नोर
संझे आकाश लिय'
गेल हमर भोर

## उदास घर

ककर अछि ई घर उदास सन
सम्बन्धक अकाल मे फंसल
माँगैत प्रेम खुदरा-उधार
के एकर रखबार
दू ईंटाक बीचक माटि
कानैत बहि गेल सुख-दुख काटि
खसल घर पर बज्रे
नीपत के? जनमल कजरी
चार सँ नोर बहय
आँखि पानि नहि
देखि-देखि खिन्न मन
ककर अछि ई घर उदास सन

पसरल टूटल बरतन-बासन
बीतो भरि नहि बैस' के आसन
ककरहु उठय मोन मे हुको नहि
प्रेमक ककरो भूखो नहि
ऐंठे कूडा-कचरा, हड्डी काँट
पसरल भरि घर
स्वच्छताक नहि बाट
जीवन ऊर्ध्व साँस सन
ककर अछि ई घर उदास सन



भरल बखारी काते-कात
पितरक घर लेल मुक्का-लात
जकर नाम हेतै दाखिल-ख़ारिज
सएह टा लेथिन बाढ़नि हाथ
कहय पितर—आब कर माफ
बहार घ'र हमरा नामे एक क्षण
ककर अछि ई घर उदास सन

सोना चानिक बासन सब लग
कुश-रेशम केर आसन सब लग
सौहार्दक खंडहर देबाल
हवा बहय जेना हँसय काल
खण्ड-खण्ड टूटल मन
ककर अछि ई घर उदास सन

स्नेहाच्छादित मोनक ऊपर
प्रश्न राखल शिला सन
जन्मजन्मान्तरक कर्ज चुकायब
संतति बाँटत ई देह तखन
ककर अछि ई घर उदास सन

# छुछुनरी

भरि साओन कीड़ी नहि मारब
करब ओकर सम्मान
भादव बीत' दही छुछुनरी
देबहु तोरा डांग

कहाँ आसिनो, किछुओ कहलियहु
कहाँ पुरायल आस
कीड़ा आ मकोड़ा संग ल' कें
देलें कतेक तों त्रास
कातिक मास दुखक नहि अंत
संग कन्त दुख देलें अनन्त
तोरा चिन्ह' मे गे छुछुनरी
बहुत केलहुँ हम भूल
अगहन पूस सेहो नहि छोड़लें
हिरदय मे भोकलें शूल

पोछि-पोछि तोहर मल
माघमे काँपय हाड़
कियैक करैत छें जाक' छुछुनरी
त्यागो पूजेक घर?
आब की बदला लेबहु तोरा सँ
आयल फागुन मास
तहूँ सतायब छोड़ि सांस ले
हमहूँ ली उच्छवास



सव जीव मे एकहि आत्मा
हमहूँ जीव तोरा सन
कनियों दुख तों हम्मर बुझितें
देतियहु हम उच्वासन
चैत मास मोन लहकि गेल
मल देखि कलेजा दहकि गेल
मोन तोहर आरो चहकि गेल
गेलें हमरे दया पर सहकि गेल

बैसाखक रौद अट्ठ
धो-पोछि हम बैसलहुँ झट
नाली बाटें घर घुसि गेलें
त्यागक लेल कयलें तों हठ
आयल जेठ, ने हेठी घटलहु
संग मे आरो परिजन सटलहु
हमर करेजा धधकि उठल अछि
कखनहुँ पसरत चट 'लौ'
मान गप्प बन आब पवित्र
त्याग करब मल, छोड़ सर्वत्र
भोर साँझ तों आ
हम मेहतरनी बनल रहब
मुदा मल त्यागि क' जुनि छुछुआ
आयल अखाड़ तों देलैं पछाड़ि
छोड़लहुँ स्वच्छ जीवनक आशा
हेगै छुछुनरि संग मे तोरे
बीतल बारहमासा

# डे माने की

कातिक हैप्पी
अगहन हैप्पी
मोनक भरल बखारी
मोने-मोन हैप्पी
बान्हल गेंठ
बंधन हैप्पी
निर्धन हैप्पी
आ
धन हैप्पी
हेयै 'डे' माने की??

भोर दूपहर आ दिन हैप्पी
घंटो, मिन्टो, पल छिन हैप्पी
ममियौत हैप्पी, पिसियौत हैप्पी
सब अपन, सहोदर, सतौत हैप्पी
हेयै 'डे' माने की??

गाम हैप्पी, चारू धाम हैप्पी
गोबरौर मे हाथ, मुदा चाम हैप्पी,
जते भोलबा, ततबे कलाम हैप्पी,
विक्रम संवत, ईसा नाम हैप्पी
हेयै 'डे' माने की??



अकुलीनताक दाग ठामहि-ठाम
कुठाम नापी
मुँह चलू कि झरकल हम झांपी
आब फूसि ताम झाम सँ हम कांपी
हम पुछैत छी ई...
हेयै 'डे' मने की??

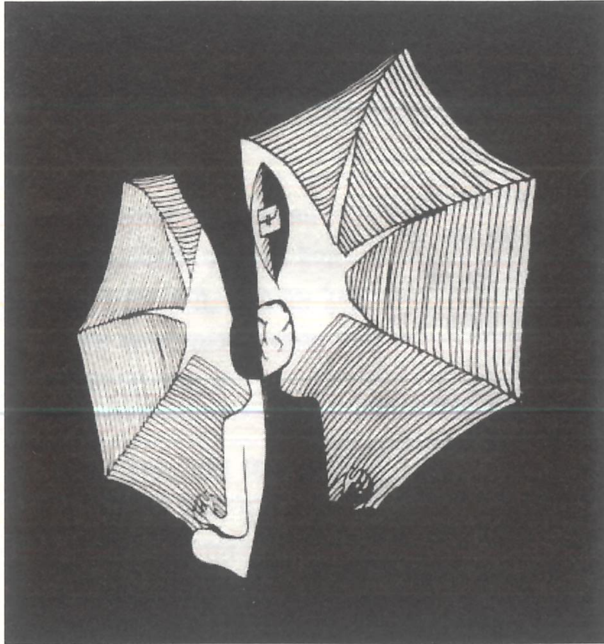
हमर शास्त्रक अर्थ मे
अछि समता
भाखाक माधुर्य नहि करू कम टा
भोजन 'हैप्पी', शयन हैप्पी
कातिक सँ अगहन हैप्पी
बारह मास अपन हैप्पी
हेयै 'डे' माने की??

बस चलै तँ कहब कि
जड़ि केर 'डे'!
डारिक 'डे'!
पतझर केर 'डे'
सजमनि केर 'डे'
कुम्हर केर 'डे'
कहब कतैक यै??

'डे' मने संस्कार फार
'डे' मने संस्कृति उखाड़
'डे' मने सांस्कृतिक जार
'डे' सुनि हमर कँपैए हाड़
एक दिन फाटल सद्भावना सीबी
सत्य कही त 'डे' मने ई
हमर सबटा दिन कमाल 'डे'

खन उज्जर, खन लाल 'डे'
एक बरख पर कहबै हैप्पी???
नहि चाही एहन विकराल 'डे'
एतेक दिन पर तँ
भ' जेतइ काल 'डे'

रोज उठितहि कहू अपन हाल
छोड़ू जाल-जंजाल
नित्य कहू हाल-चाल
हम कहैत छी सही
भेल 'डे' मने ई





# थम्हू बसात

थम्हू बसात
मोन कें पहिने स्वच्छ करू
तखन सुनब हम कोनहुं कथा
आब नहि देखलहुँ, ताव नहि देखलहुँ
झट द' बहि गेलहुँ जत'- तत'
एना तँ पसरत बस गन्दा
भ्रष्टाचारक मेघक त'र मे
कुटिल बज्र केर लैत छी संग
अनाचार केर पानि आ पाथर
सदति बसंत कें करैत छी तंग

पुरबा-पछिबा मिलिकें रहू
दुख उत्तर दक्षिणक सेहो सहू
बनू चौबिहाड़ि,मुदा मंद बहू
कारी मेघ पछाड़ि अनैत छी
पुनि मेघ उड़ायब धंधे टा
एना बहब तँ पसरत गंदे टा

# अवसान

साओन उज्जवल त्रयोदशी
तिथि कर बढ़ल सम्मान
ज्योतिपुंज पिता केर
दिनक भेल अवसान
स्वर्ग केलनि प्रस्थान
स्थान रिक्त जे भेल
ताहि मे ककर भ' रहल वास?

नीक देह निर्धिन्न आत्मा
की कुप्प अन्हार सँ आस
धरती बैसली हारि स्वयं
किएक तँ ओ छथि माइ
हे आकाश करेजा फाडू
हमहूँ उप्पर जाइ



# अभिशप्त

ककरो मोनक मेघ
मनोरथ गीड़त
प्रेमक आगि पजार' मे
हम छी रत
सौहार्दक आगि
घृणा केर पानि
एहन जीवन मरले जानि
हमर मोनक धुआँ
आकाश निहारैत अछि
सतायल मनोबल केर लुत्ती कें
हवा पछाड़ैत अछि

विचलित रहि रहि
रे मन, तूँ कही
जीतत ई मेघ अगत्ती
की जीतत हमर मनोबल
वा अभिशप्त कर्ण सन होयब हत
ककर मोनक थाल मे
फँसत पहिया आ धर्मक रथ?
के हारत के जीतत
प्रेमक आगि-पजार मे
हम छी रत

# अपेक्षा

दुख सँ थाकल पैर विहुंसि कें
पूछि रहल अछि घाम सँ
कोना खुटेसल रहल समयक संग
सम्मान बचा क' शान सँ
आलिंगन मे ल' कें आगि
मोन मे सीता सन अनुराग
हा लक्ष्मण! हा राम करैत
कपैत रावणक नाम सँ
टुकधुम, टुकधुम चललि मैथिली
अप्पन मिथिला धाम सँ

कोन माटि सँ तिलक करी?
से पूछि रहल छथि चाम सँ
आब शहर मे गीत गबैत छथि
भ' के उपेक्षित गाम सँ
टुकधुम टुकधुम चलति मैथिली
अपन मिथिला धाम सँ



# आँखिक लुत्ती

सोमना रे,
हरियरी सुझाइत छौ?
फेकि रहल अछि आँखि सँ लुत्ती
तोरा ई फुलझड़ी बुझाइत छौ?

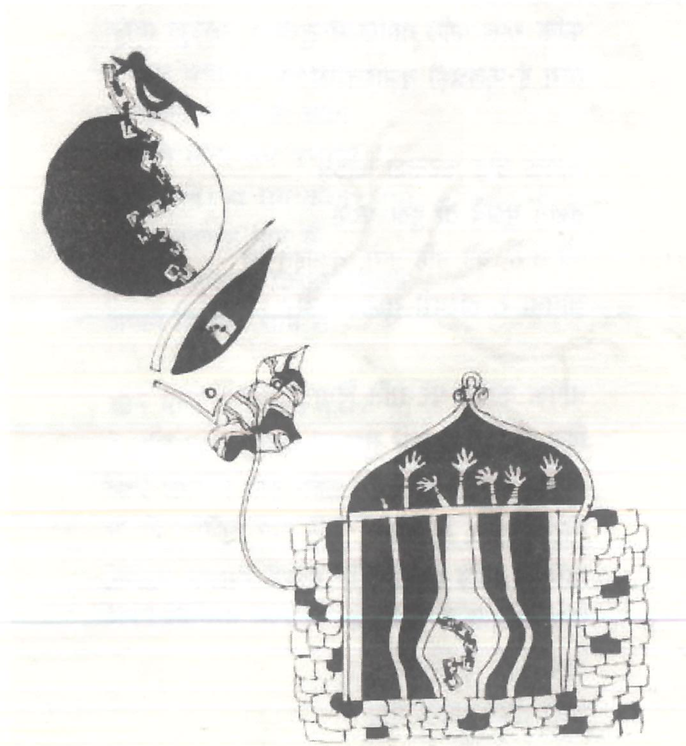
भोगक छोड़ फटक्का फोड़ब
तखन बुझबे तों दुख घरक
की करी, की नहि करी, बुझाइत छौ
सोमना रे, हरियरी सुझाइत छौ?

बापक कमाय पर राति दिवाली
दिन होली पहर-घड़ी सुझाइत छौ
बनलहुँ झक्खा हम
मोरब्बा बनि, छै बैसल
वात्सल्य गाड़ि कें हमर
निज चाशनी मे छै पैसल
बाप सुखा कें सूंगठी पूरा
चाही तोरा माछक मूड़ा

तोरहि सँ अछि भाग्यक नाप
जीवन भ' गेल हमर सराप
तोरा नहि कहियो, हमर दुखक

कोनो कड़ी सुझाइत छौ
सोमना रे, हरियरी सुझाइत छौ?

फेंकि रहल अछि
आँखि सँ लुत्ती
तोरा ई फुलझड़ी बुझाइत छौ





# आहत लक्ष्मी

हाहाकार पड़ोसियाक घर मे
मरलै भाइ जवान
कोन प्रकाश जरय चारू दिस
सब दुख सँ अनजान
जैधीक ननियाँ ससुर मरल छनि
जौतपुतहु केर पिता
भगिन पुतहु केर भाइयो मरि गेल
धिक विष्णु! धिक आगि! धिक चिता!

बेटीक ननियाँ सासु मरि गेली
पितिया दादी हमरो
तखनहुँ फूटल फटक्का घर घर
सेहन्ता लछमीक जायत कुम्हरहु?
हाहुतपनीक जीवन संग्राम
हुलसि-हुलसि भेल हुक्कालोली
धिक! धिक! धिक! धिक! पुरुखक गाम

छुतुक दशो दिशा सँ आयल
तीन दिनक संबंध सँ घायल
स्वयं लक्ष्मी आहत व्याकुल
भोगक आकांक्षा ने छुतायल!

# गीत कखन गाओत घ'र

हेयै हसीना
अहाँ बिनु
धड़कि, रुकय
हम्मर सीना
कुम्हरो 'खट' अबाज भेल,
पट खोलल हम
दूर धरि नहि अहाँ
आँखि जल छम्माछम
सत्य हसीना
चुअय पसेना
देखि-देखि बासन
अहींक नामक
भजन गबैत छी
अहींक नाम किरतन

नर्त्तन बाढ़नि
कौखन करती
कखन गीत गाओत घ'र
हड्डी घसि गेल हमर
अछि आब अहीं पर भ'र
हसीना सुन्न अहाँ बिनु घ'र



# तुरही

पाइक बाजै तुरही
पाइक तीर्थ पुरी ई
प सँ पंडा प सँ पुलिस
प सँ पापी चारु दिस
प सँ पैसा तरहथ पर
राखू पाँच नमरी जगन्नाथ रथ पर

देखू धर्मक धुरी
जय जगन्नाथपुरी
धर्म अशोथकित अनाथ
जय जगन्नाथ!
परसादक लेल पाइ नहि हाथ
नहि झुकत माथ

बन्न भगवान पंडाक तिजौरी मे
मोन होइछ डहकन लिखितहुँ
हम पंडा पर होरी मे

# तेरह ताल

दस टा मैथिल मंच
मंच पर दस टा साझी
दस साझी आ एकटा झख
पहिने हम बाजी
हमर मंच हिलैत अछि
हम घरहि बिराजी
मैथिल राज लेल
चिकरु-भोकरु मुल्ला-काजी
एक पर एक सब दिग्गज औता पंच नमाजी
क्यो ककरो नहि करता तहिया-हाँजी! हाँजी
से मैथिल केर गुण विशेष अछि
तीन तिरहुतिया तेरह ताल
मुख्यमंत्री केर कुरसी पर
सब क्यो रखताह अपन रूमाल
रुमाल पर लागत बाजी

सब कुरसी पर रहता राजा
कहब कि हमहूँ लाजे
दूरक ढोल सोहाओन मैथिली
लगीचे ठन-ठन बाजय



# प्रेमक शहर

जहिं-तहिं पसरल प्रेमक पात
जहिं-तहिं प्रेमक फूल
जहिं-तहिं प्रेमक आम आ आता
जहिं-तहिं प्रेम फल फूलि कबूल
जहि तहिं स्नेह गेन्हारी देखब
प्रेमक पटुआ पोरो साग
जहि तहिं मासु माछ मुर्गा संग
प्रेमक पान मखान अनुराग
जहि तहिं हिन्नू मुस्लिम खाइत अछि
एक थारी एक बट्टा
जहिं तहिं हारय घृणा
हराबय प्रेमक पट्ठा

हर हर बम बम सुमधुर बोल
बिनु अल्ला बिनु रसूल कहने
चान, चान नहि, सुरुज ने गोल
बिनु हिन्नू बिनु मोहमडेन के
नहि बसात केर सिहकी
एत' मनुष्यता सांस लैत अछि
ताहि सँ बेसी कहि की

एत' ने पाकिस्तान ने 'कोरियन कारा'
जे औता एक बेर, सोचता

अबितहुँ पुनि दोबारा
स्वादक जीवन ई से जानू
लहलहायल गहूम धान
धरा पहिरथि हरियर परिधान
मसुरी मूंग मकइ अछि प्राण
से सुख बूझय नहि अग्यानि
कहय कोशीक माटि आ बालु
दूर गाम सँ मोन औल-बौल
कौखन बसि जाय दरिभंगा
कौखन बसि जाय सुपौल

घर भेदी घर ल' गेल हाट
डंडी तरछा तौलय ठाठ
पाव पासंग संस्कार बाँचल अछि
बांटि चूटि कें करब कबूल
ककरहु नहि हक छै जे छीनि लै
ककरो गोत्र आ ककरो मूल...

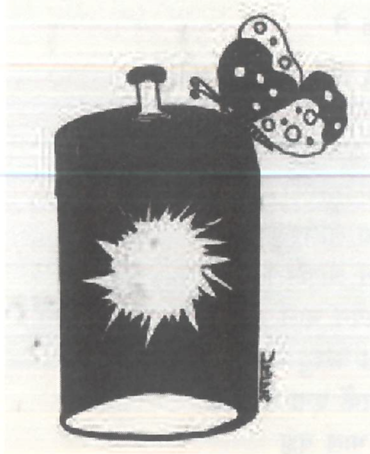




# निर्माल

किछु हमरा बुझू ने बुझू
खाली एतबे हाल बुझू
जखन कखनो पूजा करू तँ
नहि हमरा निर्माल बुझू
यज्ञवेदी अग्नि समिधा
सब समायल अछि हृदय मे
हवन मे राखू हमरा
मुदा हमरा प्रतिपाल बुझू
की कहलहुँ?
बनाकें छोड़ि देब भोग
कहि बस भोग्या
कोन तत्वसँ परिपूर्ण छी?
अपन पूर्णता मे
रक्त थोड़ेक लाल बुझू
नर आत्मा नर लेल
व्याकुल हो जखन जन्म लेल
जन्म केर अवधारणा मे
श्वेतकण आ लालकण बुझू
तखन चानन श्रीखंड तिलक वा
सर्वोन्नत अपन भाल बुझू
बहरा जायत कतहु दस भुजा
अपन आंगुरकें एना ने अहाँ
खड्ग बुझू भाल बुझू
अस्थिमज्जा चर्म आ नस

महिष सन देह हो जँ
होइ जँ ओ राक्षस तँ युद्ध करू
कल्पनामे संग दुर्गा केर
समयकें विकराल बुझू
किछु हमरा बुझू ने बुझू
खाली एतबे हाल बुझू
जखन कखनो पूजा करू तँ
नहि हमरा निर्माल बुझू
सय बातक ई एक बात थिक
डेग भरू नमहर नर पुंगव
मुदा स्वयंकें बूझि आधा
सिंहनीक संग अप्पन
थोड़ेक डेगक चालि बुझू
किछु हमरा बुझू ने बुझू
खाली एतबे हाल बुझू
जखन कखनो पूजा करू तँ
नहि हमरा निर्माल बुझू





## कोना बचब

नीति दांत त'र माथ पर ताज
शब्द मेटैतै पन्ना डरतै
गत्ता चीरीचोंथ हेतै
लेत शब्द आकार कोना
जखन भावना भोथ हेतै
रचब विरोधक रचना कोना
अन्हड़ बिहाड़ि साहित्यक
हवा हाहुती करतै क्षति
कलम दोग मे पैसि जेतै
सोचि रहल छी हंसिकें
साहित्यक थाल मे फंसिकें



# मोक्ष

हम अगिला जनम
दैव दीमक बनी
काठ हिरदय जकर
छिद्र ताहि मे करी
मूर्खताक सदति
हरियरी हम हरी
एहि कर्म मे मरी
माटि मे हम गड़ी
नहि कोड़ो ने बाँस
भोजन वा उपास
रही निर्भय निडर
भेटय पुस्तक मे घर
चाटि अक्षर तरी

मोक्ष वरण करी



# सत्वहीन पुरुष

पाँचो इन्द्रिय भ' गेल विवश
जे काज करथि ताहि मे थस
सत्य देखि क' आँखि मुनैत छथि
सत्य सुनि कान बन्न
नीक सूंघबाकाल नाक भरल
जीह बेसुआद हरक्षण
हाथ मिलाबैत चाम गड़ैत छनि
चाहियनि चिक्कन तन
कोमल मन पर तीर चलैत छनि
सबहक दनादन
यदि उपचार बताबथि केओ
तिनकर होयत अबहेला
सड़इत संस्कृतिक महकैत ज्ञान सँ
मोनपर पड़ि गेल ठेला

# विष्णु

यौ विष्णु अहाँक पूजा करितहुँ हम चौगुन्ना
शंख बजा क' संग दितथि जदि
काली, दुर्गा, अन्नपूर्णा
बिनु लक्ष्मीक अनुमतिक पूजा
फूटत सबटा शंख
उज्जर झकझक शंख घिना गेल
बदलि गेल अछि रंग
विष्णु यौ,
कत' महादेव छथि?
गण सब कत' हेरायल महादेवक
संग ने कियो विराजय?
कहू देवलोक मे भोंभा शंख
कथी लेल बाजय



# सहनशक्ति

गरम लोहा गरम टिन
लहकैत भट्ठी सन जीवन
किछु प्रेमक, लोहिया, ताबा
गढ़' के अछि आदत
कला स्वयं हमर बाधक
परहित लेल मोन सहै आघात
सद्भावना पर चोट बात-बात
स्वर्णक आभूषणक कला सँ
दूरहि हम रहैत छी
आर कला कुम्हारक
ओरिया-ओरिया सहैत छी,
प्रेमक ठोकर देब तँ
टूटल घैलक दुख सहैत छी
नहि संबंध ओहन कला सँ
जकरा सहनशक्ति केर आदत नहि
मोनक भट्टीक संग लौह शक्ति ल'
पिघलैत रह' के आदत-ए
हम लोहा बनिकें प्रसन्न छी
एत' हीरा मुँह मे बाजक-ए
सत्ता कला जगत केर सेहो
बौआ बहुत अराजक-ए

• • •



**नन्दिनी पाठक**


जन्म : 25 जनवरी, 1961

जन्मस्थान : कर्णपुर, सुपौल

शिक्षा : स्नातक कला, पुस्तकालय विज्ञानमे स्नातक

रुचि : मूर्तिकला, चित्रकला, हस्तरेखामे गंभीर अध्ययन

लेखन : 1978 सँ हिन्दी, मैथिलीमे निरन्तर सृजन

विशेष : दैनिक जागरण समूह द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर 2012 मे प्रायोजित 'मेरा शहर मेरा गीत' लेल रांची शहरक गीत-लेखन चयनित, प्रशंसित। एहि गीतक चयन कयलनि प्रसून जोशी आ कंपोज कयलनि आदेश श्रीवास्तव। ख्यात पार्श्व गायक शान एहि गीत के अपन स्वर देलनि।

संपर्क : फ्लैट नंबर 1-सी., वैष्णवी एन्क्लेव, अमेठिया नगर, नामकुम, रांची

मो. : 8294995021



ISBN 978-81-939894-9-4





किसुन संकल्प लोक

सुपौल (बिहार)

₹ 100/-